णाणाजीवेहि अंतराणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १ ॥

णाणाजीवणिद्देसो एगजीवपडिसेहफलो । अंतरणिद्देसो सेसाणिओगद्दारपडिसेहफलो । गदिणिद्देसं सेसमग्गण पडिसेहफलो । णिरयगइणिद्देसो सेसगईपडिसेहफलो । णेरइयणिद्देसो तत्थट्ठियपुढविकाइयादिपडिसेहफलो । केवचिरं-णिद्देसो समया-वलियखण-लव-मुहुत्तादिफलो । अवसेसं सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ २ ॥

कुदो? सव्वद्धासु अवट्ठाणादो । णाणाजीवेहि कालणिरूवणाए चेव एदेसिमंतरमत्थि एदेसिं च णत्थि त्ति णव्वदे । तदो अंतरपरूवणा ण कादव्वे त्ति । एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा- कालाणिओगद्दारे जेसिमंतरमत्थि त्ति अवगदं तेसिमंतराणं पमाणपरूवणट्ठमिदमणिओगद्दारमागदं । जदि एवं तो सांतररासीणमेव परूवणा कीरउ अंतर-

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगमसे गतिमार्गणाके अनुसार नरकगतिमें नारकी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १ ॥

'नाना जीवोंकी अपेक्षा' यह निर्देश एक जीवकी अपेक्षाके प्रतिषेधके लिये है । 'अन्तर' निर्देशका फल शेष अनुयोगद्वारोंका प्रतिषेध है । 'गति' पदके निर्देश करनेका फल शेष मार्गणाओंका निषेध करना है । 'णिरयगदि' पदके निर्देश करनेका फल शेष गतियोंका निषेध करना है । 'नारकी जीवों' का निर्देश वहांपर स्थित पृथिवीकायिकादि जीवोंका प्रतिषेधक है । 'कितने काल' यह निर्देश समय, आवली, क्षण, लव व मुहूर्तादि रूप कालविशेषोंका सूचक है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

नारकी जीवोंका अन्तर नहीं है ॥ २ ॥

क्योंकि, उनका सर्व कालोंमें अवस्थान है ।

शंका— नाना जीवोंकी अपेक्षा की गई कालप्ररूपणासे ही 'इनका अन्तर है और इनका नहीं है' यह बात जानी जाती है । अत एव फिर अन्तरप्ररूपणा नहीं करना चाहिये ?

समाधान— यहां परिहार कहते हैं । वह इस प्रकार है— कालानुयोगद्वारमें जिन जीवोंका 'अन्तर है' ऐसा ज्ञात हुआ है, उनके अन्तरोंके प्रमाणप्ररूपणार्थ यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका— यदि ऐसा है तो अन्तरविशिष्ट सान्तरराशियोंकी ही प्ररूपणा करना

१. मु. द्दारप.डसेहफलो । णेरयण - इति पाठः । २. मु. पत्तो अंतर इति पाठः ।

विसिट्ठाणं, ण सव्वद्धरासीणमिदि? तो खहि एवं घेत्तव्वं दव्वट्ठियणयसिस्साणुग्गहट्ठं कालाणिओगद्दारं भणिय संपहि पज्जवट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठमतराणिओगद्दारपरूवणा आगदा त्ति।

णिरंतरं ॥ ३ ॥

निर्गतमंतरमस्माद्राशेरिति णिरंतरं। तं जेण सिद्धं तेण एसो पज्जुदासपडिसेहो[1], एसो रासी अंतरादो पुधभूदो वदिरित्तो त्ति वुत्तं होदि। जदि एवं तो पुणरुत्तदोसो पावदे, पुव्वसुत्तप्पसिद्धत्थपरूवणादो। ण एस दोसो, पुव्विल्लसुत्तं जेण अभावपहाणं तेण पसज्जपडिसेहपडिबद्धं। तदो तेण अभावं पत्त विहीए परूवणट्ठमेदस्स अवयारादो।

एवं सत्तसु पढवीसु णेरइया ॥ ४ ॥

चाहिये, सब काल रहनेवाली राशियोंकी नहीं?

समाधान– तो फिर इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये कि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ कालानुयोगद्वारको कहकर इस समय पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ अन्तरानुयोगद्वारप्ररूपणा आई है।

नारकी जीव निरन्तर हैं ॥ ३ ॥

इस राशिका अन्तर नहीं है, इसलिये यह निरन्तर है। (यह 'निरन्तर' शब्दका निरुक्त्यर्थ है)। चूंकि वह राशि सिद्ध है, इसीलिये यह पर्युदासप्रतिषेध है। यह नारकराशि अन्तरसे पृथग्भूत वा व्यतिरिक्त है यह उक्त कथनका अभिप्राय है।

शंका– यदि ऐसा है तो पुनरुक्तदोष प्राप्त होता है, क्योंकि, इस सूत्र द्वारा पूर्व सूत्रमें प्रसिद्ध अर्थका प्रतिपादन किया गया है?

समाधान– यह कोई दोष नहीं, क्योंकि पूर्व सूत्र अभावप्रधान है, इसलिये वह प्रसज्यप्रतिषेधसे सम्बद्ध है। इस कारण उससे अभावको प्राप्त राशिकी विधिके निरूपणार्थ इस सूत्रका अवतार हुआ है।

विशेषार्थ– अभाव दो प्रकारका होता है, पर्युदास और प्रसज्य। पर्युदासके द्वारा एक वस्तुके अभावमें दूसरी वस्तुका सद्भाव ग्रहण किया जाता है। और प्रसज्यके द्वारा केवल अभावमात्र समझा जाता है। चूंकि प्रस्तुत प्रसंगमें अन्तरके अभावमें नारक राशिका अस्तित्व विवक्षित है इसलिये यहां पर्युदास पक्ष ग्रहण करना चाहिये।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव अन्तरसे रहित या निरन्तर हैं ॥ ४ ॥

---

१ मु. प्रतौ पज्जुदास इति पाठः।

कुदो? अंतराभावं पडि विसेसाभावादो[1]।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता, मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीणमंतरं केवचिरं कालादो होंति[1] ॥ ५ ॥

दोण्णं गईणमेगवारेण णिद्देसो किमट्ठं कओ ? देव-णेरइयाणं व एदेसिं पुध-खत्तावासो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं । सेसं सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ६ ॥

एसो पसज्जपडिसेहो, विहीए पहाणत्ताभावादो ।

णिरंतरं ॥ ७ ॥

एसो पज्जुदास[2]पडिसेहो, पडिसेहस्स पहाणत्ताभावादो ।

क्योंकि, अन्तराभावके प्रति सातों पृथिवियोंके नारकियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

तिर्यचगतिमें तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यनियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ५ ॥

शंका– दोनों गतियोंका निर्देश एक वार किसलिये किया ?

समाधान – देव और नारकियोंके समान इनका पृथक् क्षेत्रमें निवास नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ दोनों गतियोंका एक वार निर्देश किया है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता ॥ ६ ॥

यह प्रसज्यप्रतिषेध है, क्योंकि, यहां विधिकी प्रधानताका अभाव है ।

वे जीव निरन्तर हैं ॥ ७ ॥

यह पर्युदास प्रतिषेध है, क्योंकि, यहां प्रतिषेधकी प्रधानता नहीं है ।

---

१. अ. प्रतौ होंवि इति पाठः ।

२. मु. प्रतौ पज्जुदास इति पाठः ।

मणुसअपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ९ ॥

सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु मणुसअपज्जत्तएसु कालं काऊण अण्णगइं गएसु एगसमयमंतरं होऊण बिदियसमए अण्णेसु जीवेसु 'तत्थुप्पण्णेसु लद्धमेगसमयमंतरं।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो' ॥ १० ॥

कुदो ? मणुसअपज्जत्तएसु कालं काऊण अण्णगइं गएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकाले अइक्कंते पुणो णियमेण मणुसअपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणजीवाणमुवलंभादो ।

देवगदीए देवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ११ ॥

सुगमं ।

मनुष्य अपर्याप्तोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है ॥ ९ ॥

जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र मनुष्य अपर्याप्तोंके मरकर अन्य गतिको प्राप्त होनेपर एक समय अन्तर होकर द्वितीय समयमें अन्य जीवोंके मनुष्य अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेपर एक समय अन्तर प्राप्त होता है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग कालप्रमाण है ॥ १० ॥

क्योंकि, मनुष्य अपर्याप्तोंके मरकर अन्य गतिको प्राप्त होनेके पश्चात् पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके बीत जानेपर पुनः नियमसे मनुष्य अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव पाये जाते हैं ।

देवगतिमें देवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१. मु. प्रतौ अण्णेसु तत्थु- इति पाठः ।

२. उवसम-सुहुमाहारे वेगुव्वियमिस्स-णरअपज्जत्ते । सासणसम्मे मिस्से सांतरगा मग्गणा अट्ठ ॥ सत्त दिणा छम्मासा वासपुधत्तं च बारसमुहुत्ता । पल्लासंखं तिण्हं वरमवरं एगसमयो दु ॥ गो.जी. १४२-१४३.

णत्थि अंतरं ॥ १२ ॥

एदं पि सुगमं ।

णिरंतरं ॥ १३ ॥

सुगमं ।

भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा देवगदिभंगो ॥ १४ ॥

सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरंकालादो होदि ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

देवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ १२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

देव निरन्तर हैं ॥ १३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी तक देवोंका अन्तरसम्बन्धी निरूपण देवगतिके समान है ॥ १४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुसार एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त; बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त; त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त; चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त; पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

णत्थि अंतरं ॥ १६ ॥

एदं पज्जवट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं परूविदं ।

णिरंतरं ॥ १७ ॥

एदं सुत्तं दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं परूविदं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुम-पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १८ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ १९ ॥

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ १६ ॥

यह सूत्र पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ कहा गया है ।

उक्त जीव निरन्तर हैं ॥ १७ ॥

यह सूत्र द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ कहा गया है ।

कायमार्गणाके अनुसार पृथिवीकायिक, पृथिवीकायिक पर्याप्त, पृथिवीकायिक अपर्याप्त; बादर पृथिवीकायिक, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त, ये नौ पृथिवीकायिक जीव, इसी प्रकार नौ अप्कायिक, नौ तेजस्कायिक, नौ वायुकायिक, नौ वनस्पतिकायिक व नौ निगोद जीव, तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा उनके पर्याप्त व अपर्याप्त और त्रसकायिक तथा उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ १९ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ २० ॥

सुगमं । दुणयाणुग्गहट्ठं परूविद-दोसुत्ताणि जाणावेंति सुत्तकत्तारस्स वीयरायत्तं जीवदयावरत्तं च ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगि-ओरालियकायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वियकायजोगि-कम्मइयकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २१ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ २२ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ २३ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

ये सब जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है । दोनों नयोंका अवलम्बन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ कहे गये पूर्वोक्त दो सूत्र सूत्रकर्ताकी वीतरागता और जीवदयापरताको सूचित करते हैं ।

योगमार्गणाके अनुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और कार्मणकाययोगी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ २२ ॥

यह सूत्र सुगम[1] है ।

वे जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ २३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१. अ. क. प्रत्योः एतत्सूत्रं तट्टीका 'सुगमं' च नोपलभ्यते

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २४ ॥

सुगमं

जहण्णेण एगसमयं ॥ २५ ॥

कुदो ? वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु सव्वेसु पज्जत्तीओ समाणिदेसु एगसमयमंतरिदूण बिदियसमए देवेसु णेरइएसु उप्पण्णेसु वेउव्वियमिस्सकायजोगीणमंतरं एगसमयं होदि ।

उक्कस्सेण बारसमुहुत्तं ॥ २६ ॥

देवेसु णेरइएसु वा ऊणुप्पज्जमाणा जीवा जदि सुट्ठु बहुअं कालमच्छंति तो बारस मुहुत्ताणि चेव । कधमेवं[1] णव्वदे? जिणवयणविणिग्गयवयणादो ।

आहारकायजोगि आहारमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २७ ॥

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ २४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका जघन्य अन्तर एक समय होता है ॥ २५ ॥

क्योंकि, सब वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके पर्याप्तियोंको पूर्ण करलेनेपर एक समयका अन्तर होकर द्वितीय समयमें देवों व नारकियोंके उत्पन्न होनेपर वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अन्तर एक समय होता है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अन्तर उत्कृष्टसे बारह मुहूर्त होता है ॥ २६ ॥

देव अथवा नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव यदि बहुत अधिक काल तक नहीं उत्पन्न होते हैं तो बारह मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होते है ।

शंका— ऐसा कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह जिनभगवानके मुखसे निकले हुए वचनोंसे जाना जाता है ।

आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ २७ ॥

---

१. मु. प्रतौ कथमेदं इति पाठः ।

सुगमं ।

अहण्णेण एगसमयं ॥ २८ ॥

कुदो ? आहार[1]-आहारमिस्सजोगेहि विणा तिहुवणजीवाणमेगसमयमुवलंभादो।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २९ ॥

कुदो ? दोहि वि जोगेहि विणा सव्वपमत्तसंजदाणं वासपुधत्तावट्ठाणदंसणादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदाण-मंतरं केवचिरं कालादो होदि? ॥ ३० ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ३२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर जघन्यसे एक समय होता है ॥ २८ ॥

क्योंकि, आहारक और आहारकमिश्र काययोगियोंके बिना तीनों लोकोंके जीव एक समय पाये जाते हैं ।

उक्त जीवोंका अन्तर उत्कृष्टसे वर्षपृथक्त्वप्रमाण होता है ॥ २९ ॥

क्योंकि, उक्त दोनों ही योगोंके विना समस्त प्रमत्तसंयतोंका वर्षपृथक्त्व काल तक अवस्थान देखा जाता है ।

वेदमार्गणाके अनुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी और अपगतवेदी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ३० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे जीवराशियां निरन्तर है ॥ ३२ ॥

---

१ मु. प्रती आहारकाय इति पाठः ।

सुगमं ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाईणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ३४ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ३५ ॥

सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणि-आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणि-मणपज्जवणाणाणि-केवलणाणीणमंतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३६ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

कषायमार्गणाके अनुसार क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी और कषायरहित जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता ॥ ३४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, विभंगज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी और केवलज्ञानी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ३६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

णत्थि अंतरं ॥ ३७ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ३८ ॥

सुगमं ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा असंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३९ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ४० ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ४१ ॥

सुगमं ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं अंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४२ ॥

पूर्वोक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ ३८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयममार्गणाके अनुसार संयत, सामायिकछेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत, परिहारशुद्धिसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत, संयतासंयत और असंयत जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ३९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ४० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ ४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्मसांपरायिक जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ४२ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ४३ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयसंजदेहि विणा एगसमयदंसणादो ।

उक्कस्सेण छम्मासाणि ॥ ४४ ॥

कुदो? खवगसेडीसमारोहणस्स छम्मासाणमुवरिमुक्कस्संतरस्स अणुवलंभादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-केवलदंसणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४५ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ४६ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्मसाम्परायिक जीवोंका अन्तर जघन्यसे एक समय होता है ॥ ४३ ॥

क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंके विना एक समय देखा जाता है ।

उक्त जीवोंका अन्तर उत्कृष्टसे छह मासका होता है ॥ ४४ ॥

क्योंकि, क्षपकश्रेणी आरोहणका छह मासोंके ऊपर उत्कृष्ट अन्तर नहीं पाया जाता ।

दर्शनमार्गणानुसार चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ४६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ ४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिय-तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४८ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ५० ॥

सुगमं

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ५२ ॥

लेश्यामार्गणाके अनुसार कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्कलेश्यावाले जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ४८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ४९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ ५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यमार्गणाके अनुसार भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ५२ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठि-वेदगसम्माइट्ठि-मिच्छाइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५४ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ५६ ॥

सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठीणमंतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक जीव निरन्तर हैं ॥ ५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुसार सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे जीवराशियां निरन्तर हैं ॥ ५६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ५८ ॥

कुदो? तिसु वि लोएसु उवसमसम्मादिट्ठीणमेक्कम्हि समए अभावदंसणादो।

उक्कस्सेण सत्तरादिंदियाणि ॥ ५९ ॥

रादिंदियमिदि दिवसस्स सण्णा, अहोरत्तेहि मिलिएहि दिवसववहारदंसणादो। उवसमसम्मत्तस्स सत्तदिवसमेत्तमंतरं होदि त्ति वुत्तं होदि। एत्थ उवसंहारगाहा-

सम्मत्ते सत्त दिणा विरदाविरदीए चोद्दस हवंति।
विरदीसु अ पण्णरसा विरहिदकालो मुणेयव्वो'॥ १॥

सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? ॥ ६० ॥

सुगमं।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है॥ ५८॥

क्योंकि, तीनों ही लोकोंमें उपशमसम्यग्दृष्टियोंका एक समयमें अभाव देखा जाता है।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर उत्कृष्टसे सात रात-दिन है॥ ५९॥

'रात्रिदिव' यह दिवसका नाम है, क्योंकि सम्मिलित दिन व रात्रिमें 'दिवस' का व्यवहार देखा जाता है। उपशमसम्यक्त्वका अन्तर सात दिवसमात्र होता है, यह उक्त कथनका निष्कर्ष है। यहां उपसंहारगाथा—

उपशमसम्यक्त्वमें सात दिन, (उपशमसम्यक्त्व सहित) विरताविरति अर्थात् देशव्रतमें चौदह दिन, और विरति अर्थात् महाव्रतमें पन्द्रह दिन प्रमाण विरहकाल जानना चाहिये॥ १॥

सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? ॥ ६०॥

यह सूत्र सुगम है।

---

१ पढमुवसमसहिदाए विरदाविरदीए चोद्दसा दिवसा। विरदीए पण्णरसा विरहिदकालो दु बोद्धव्वो॥ गो. जी. १४४.

जहण्णेण एगसमयं ॥ ६१ ॥

कुदो ? सासणसम्मत्त-सम्मामिच्छत्तगुणाणं जहण्णेण एगसमयं अंतरं पडि विरोहाभावादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६२ ॥

सुगमं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णि-असण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ६४ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है ॥ ६१ ॥

क्योंकि, सासादनसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानोंके जघन्यसे एक समय अन्तरके प्रति कोई विरोध नहीं है ।

उक्त जीवोंका अन्तर उत्कृष्टसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥ ६२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञिमार्गणाके अनुसार संज्ञी व असंज्ञी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञी व असंज्ञी जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञी व असंज्ञी जीव निरन्तर हैं ॥ ६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहाराणुवादेण आहार-अणाहाराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६६ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ६८ ॥

सुगमं ।

एवं णाणाजीवेण अंतराणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

आहारमार्गणाके अनुसार आहारक व अनाहारक जीवोंका अन्तर कितने काल-तक होता है ? ॥ ६६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक और अनाहारक जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ६७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे निरन्तर हैं ॥ ६८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।